शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (233-240), Jan-March 2019

परिवार का बदलता स्वरूप : समस्याएं व चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

विवेक सुकृष्ण
शोधार्थी,, समाजषास्त्र विभाग,
बी0एस0ए0 कालिजए मथुरा
इमेल . vivekmittal389@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत लेख में मेरठ शहर में उभरती एकाकी परिवार में बच्चों के सामाजीकरण के पहलू पर प्रकाश डाला गया है। इसमें 20 परिवारों के बच्चों का चयन करने में उद्देश्यात्मक निर्देशन तकनीकी का प्रयोग कर बच्चों के सामाजीकरण का अध्ययन किया गया है, चयनित बच्चों में आत्मविश्वास की कमी देखने को मिलता है जिन बच्चों के पिता घर से दूर रहकर व्यवसाय या नौकरी में व्यस्त है उन बच्चों का समाजीकरण अच्छे तरीके से नही हो पाता तथा वे आगे चलकर असामान्य व्यवहार के लक्षण दिखायी पड़ने लगते है। शेयरिंग की भावना का अभाव, अकेले रहने की प्रवृत्ति, हिंसक प्रवृत्ति, समय से पहले परिपक्वता, अपराधिक व हिंसक प्रवृत्तियों का विकास। एकांकी परिवारों की बढ़ती संख्या इसके लिए जिम्मेदार है। समाजो की तेजी से बदलती प्रवृत्ति के कारण ऐसी संस्थाओं के विकास की नितान्त आवश्यकता है जो समाज में उत्पन्न हो रही असमान्य प्रवृत्ति की समाप्त करने या कम करने में हमारी मदद करें।

मुख्य शब्द—*एकांकी परिवार, समाजीकरण, हिंसक प्रवृत्ति, व्यक्तित्व, समाज आदि।*

प्रस्तावना

परिवार मानव समाज की पूर्णतः मौलिक एवं सार्वभौमिक इकाई है। हम में से प्रत्येक किसी न किसी परिवार का सदस्य है परिवार एकमात्र प्राकृतिक समूह है प्राणीशास्त्रीय सम्बन्धों के आधार पर बहुत से समूहों का निर्माण होता है मानव का सम्पूर्ण जीवन समाज में व्यतीत होता है। समाज व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करता है। परिवार के मूल में स्त्री—पुरूष है और समाज में परिवार की केन्द्रीय स्थिति होती है। वास्तव में परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। परिवार से ही समाज का विस्तार हुआ है और उस पर ही प्रत्येक समाज का जीवित रहना निर्भर करता है। परिवार सन्तानोत्पत्ति द्वारा समाज के लिए नवीन सदस्यों की भर्ती करता है, जो मृत व्यक्तियों के रिक्त स्थान की पूर्ति करते रहते हैं और इस प्रकार समाज की निरन्तरता बनायें रखते हैं। परिवार का स्वरूप प्रारम्भिक अवस्था में इस प्रकार का नहीं था जिस प्रकार का आज है। सामाजिक इकाई के रूप में परिवार को दोनों लिंगों के व्यक्तियों का वह समूह कहा जाता है, जो विवाह, रक्त या गोद लेने के अधिकार से जुड़े हुए हों, जो आयु

लिंग और सम्बन्धों पर आधारित भूमिकाएँ अदा करते हो और जो सामाजिक रूप में एकाकी गृह में रहते हों।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी शब्द परिवार आंग्ल भाषा के 'फैमिली' शब्द का रूपान्तर है। यह लैटिन भाषा के ''फैमुलस'' शब्द से बना है। जो एक ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसमें माता–पिता, बच्चे, नौकर और दास हों। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका अर्थ पति–पत्नी व बच्चों से होता है।

परिवार विवाह, रक्त–सम्बन्धों एंव नातेदारी से बंधे हुए व्यक्तियों का वह छोटा संगठन है जिसमें वैयक्तिकता, प्राथमिक सम्बन्ध तथा स्थायित्व के गुण सबसे अधिक मात्रा में विद्यमान होते हैं। माता–पिता तथा उनके बच्चों से बनने वाला परिवार ही सामाजिक ढाँचे की केंन्द्रीय इकाई होता है।

ऑगबर्न एवं निमकॉफ ने परिवार के सम्बन्ध में ''ए हेण्ड बुक ऑफ सोशियोलॉजी'' में कहा है कि ''परिवार बच्चों अथवा बिन बच्चों वाले पति–पत्नी अथवा किसी पुरूष अथवा स्त्री में से एक ही के साथ रहने वाले बच्चों की लगभग एक स्थायी समिति है।''

लूसी मेयर ने अपनी पुस्तक में ''एन इन्ट्रोडक्सन टू सोशल एन्थ्रोपालॉजी'' कहा है, ''परिवार एक गृहस्थ समूह है, जिसमें माता पिता तथा उनकी सन्तानें साथ–साथ रहते हैं। इसके मूल रूप में दम्पत्ति और उसकी सन्तान रहती है।''

जौली ने परिवार के सम्बन्ध में ''हिन्दू लॉ एण्ड कस्टम''में बताया है कि ''न केवल माता–पिता और बालक, भाई और सौतेले भाई ही सामान्य रूप से सम्पत्ति पर निर्भर रहते हैं बल्कि कभी–कभी उनमें कई पीढ़ियों तक के पूर्वज, वंशज और समान्तर सम्बन्धी भी हो सकते है।'' किसी भी समाज में जैसें सांस्कृतिक नियम होते हैं, उन्हीं के अनुसार परिवार एक विशेष स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

विस्तृत परिवार

साधारण तथा पश्चिमी समाजों में एक ऐसा परिवार जिसमें वृद्ध व्यक्ति, उसकी पत्नी, उसके पुत्र तथा उसकी पत्नियाँ और बच्चे साथ–साथ रहते हों उसे विस्तृत परिवार कहा जाता है। एक ही माता–पिता से सम्बन्धित तीन पीढ़ियों के सदस्य एक विस्तृत परिवार का निर्माण करते है।

संयुक्त परिवार

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता है भारत में संयुक्त परिवार का इतिहास वैदिक काल से ही पाया जाता है।

संयुक्त परिवार के सम्बन्ध में इरावती कार्वे ने ''किनशिप आर्गेनाइजेशन इन इण्डिया'' [illegible]

पूजा–पाठ में भाग लेते हैं तथा किसी न किसी प्रकार का रक्त सम्बन्ध रखते हैं। विभिन्न विद्वानों ने संयुक्त परिवार की विविध संकल्पनाएँ की हैं। इरवती कर्वे संयुक्तता में सहनिवासिता को महत्वपूर्ण मानती है। वहीं हैराल्ड गूल्ड, रामकृष्ण मुखर्जी, एस0सी0 दुबे, बी0एस0 कोहेन, आदि सहनिवासिता और सहभोग को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं।

केन्द्रीय परिवार या नाभिकीय परिवार

केन्द्रीय परिवार, आधुनिक समाज का उदाहरण है हमारे समाज पर नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, लौकिकीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण के प्रभाव का परिणाम केन्द्रीय परिवार है। जिन समाजों को औद्योगिकीकरण के आधार पर जाना जाता है वहाँ एकल परिवार की अधिकता होती है। आज के लोकतांत्रिक विचारों वाले समाज में प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है जिसके लिए वह एकल परिवार को ही वरीयता देता हैं एकांकी परिवारों की संख्या आज के युग मे सबसे अधिक है। ऐसे परिवारों का संगठन बहुत सरल प्रकृति का होता है। आकार की दृष्टि से ये परिवार बहुत छोटे होते हैं। एकांकी परिवार में पति–पत्नी की एक समान स्थिति होती है, तथा दोनों परिवार के संचालन में अपना योगदान देते हैं। अतः निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तिवादिता और भौतिकवादिता एकांकी परिवार को बढ़ावा देती है। आज के समाज में एकांकी परिवार, परिवार की सबसे छोटी इकाई है जिसमें पति–पत्नी व बच्चे रहते हैं। इसके अन्तर्गत रिश्तेदारों को सम्मिलित नहीं करते हैं।

भारत में तेजी से बदलाव के साथ ही साथ हर क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। परिवार नामक संस्था का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। चार दीवारी से मकान बनता है, और उसमें रहने वाले लोगों के आपसी प्रेम, समर्पण, और सद्भावनाओं से एक मकान घर का आकार लेता है। घर (परिवार) हमें सिर्फ सुरक्षा ही नही प्रदान करता, बल्कि हमें संस्कार और संस्कृति से भी समृद्ध कराता है, आज आधुनिक समय में एकल परिवारों का चलन बढ़ा है, तो वहीं तलाक की चक्की से पिसते रिश्तों ने परिवारों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी की है। वर्तमान में महानगरों से लेकर शहरों, कस्बों और ग्रामीण इलाको में भी एकल अभिभाकों का चलन बढ़ रहा है, ऐसी स्थिति में एक ओर जहाँ सामाजिक ढाँचा, वहीं दूसरी ओर बच्चों के सर्वागींण विकास पर भी प्रश्न चिन्ह लग रहा है। यह एक ऐसी ज्वलन्त समस्या है, जो देश और समाज दोनों की जड़ों में दीमक लगा रही है। उससे भी विकट स्थिति यह है कि आज समाज में जो स्त्री–पुरूष एकल अभिभावक की भूमिका निभा रहे हैं, उनसे उनके बच्चे कभी शारीरिक रूप से तो, कभी मानसिक रूप से दुर्घटनाओं के शिकार हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में जरूरी है उन छोटी–छोटी बातों का ख्याल रखने की, जिससे बच्चों को सुरक्षित जीवन मिल सके और उनका शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास हो सके।

पिछले पचास वर्षों में पारिरिक संरचना में तेजी से बदलाव व आये है। परिवार माता–पिता (संयुक्त रूप से) के साथ होने के बजाय अब एकल हो रहा है। एकल अभिभावक के करण तलाक, अलगाव एवं मृत्यु कोई भी एक हो सकता है।

एकल अभिभावक को आमतौर पर बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं कई मानसिक परेशानियों से भी गुजरना पड़ता है। बच्चे की पूरी जिम्मेंदारी एक (सदस्य) पर ही आ जाती है। बच्चों की देखरेख, नौकरी और घर की गतिविधियों के बीच संतुलन साधना एक ही व्यक्ति पर आ जाता है। एक ही व्यक्ति के लिए बच्चें/बच्चों की देखभाल और अन्य जिम्मेदारी को उठाना तनावपूर्ण हो सकता है।

एकल अभिभावक को अपने बच्चे की परवरिश पर खास ध्यान देना होता है, ऐसे में एकल अभिभावक को प्रत्येक कार्य योजना के तहत बहुत सोच–समझ कर करनी होती है ऐसे में एकल अभिभावकों की भूमिका अपने बच्चे को जरूरत से ज्यादा समय देने के साथ ही साथ उनके ऊपर ध्यान केन्द्रित करना रहता है और बच्चे भी समय के अनुसार समझदार हो जाते है।

एकल अभिभावक की भूमिका चुनौतीपूर्ण होती है विशेष रूप से जब परिवार की देखभाल महिला की अध्यक्षता में की जाती है। अकेली महिला की समस्या, बच्चों की परवरिश, उनके भविष्य और जीवन में उनको स्थापित करने से है।

अतः एकल अभिभावकों की संख्याओं का बढ़ना, अपने आप में एक चुनौती है जो हमारे समाज में धीरे–धीरे फैल रही है। सामाजिक ताना–बाना बदलने के साथ ही साथ ग्रामीण एवं शहरी समाज में भी तेजी से बदलाव आ रहा है। नातेदारी में तेजी से कमी होने के साथ रिश्तों में अविश्वास के फलस्वरूप उनमें (रिश्तों) बिखराव हुआ है।

साहित्य अवलोकन

लगभग पचास वर्षों से अधिक समय से परिवारिक संस्थाओं एवं उनकी संरचनाओं में भी वृद्धि हुई है। अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि भारतीय समाज में एकल अभिभावक की समस्याएं एवं चुनौतियाँ और उनकी भूमिका निर्वाहन करने में क्या बाधाएँ हैं।

स्टीफन और लारेंस (2016) ने नाइजीरिया के अमासोमा समुदाय का सूक्ष्म अध्ययन किया और पाया कि एकल माता–पिता वाले घरों में बच्चों के द्वारा सामना की जाने वाली समस्यायें अधिक है एंवम् अभिभावक अलगाव के समय एकल माता–पिता, परिवार एवम् बच्चे की बढ़ती उम्र में आने वाली समस्यायें गंम्भीर है।

पाल अमाटो, सारा पैटरसन और ब्रेट बीटी ने अपने अध्ययनों में यह विचार किया है कि एकल माता–पिता परिवारों में वृद्धि ने जनसंख्या स्तर पर बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि को बहुत प्रभावित किया। यह अध्ययन 1990 से 2011 के बीच एकल माता–पिता के साथ रहने वाले बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर आधारित है।

निधि कोतवाल और भारती ने अपने अध्ययन में बताया कि एकल माताओं के सामने आने वाली सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक, समस्याऐं थी, जिसमें वित्तीय समस्या एकल माताओं के तनाव का मुख्य कारण था।

जैनी0एम0 हिल्टन और एस्थर एल0 डेविल (2008) ने 30 एकल मां, 30 एकल पिता और 30 जुड़े हुए परिवारों का अध्ययन किया। एकल पिता के पास एकल मां की तुलना में बेहतर संसाधन थे, विवाहित माता–पिता की तुलना में दोस्तों पर अधिक निर्भर थे। एकल मांओ में कम शिक्षा, कम प्रतिष्ठित नौकरियाँ, कम आय और अन्य माता–पिता की भूमिका के साथ विवाहित माता–पिता की तुलना में उनके पास कम सामाजिक संसाधान और अधिक कठिनाई थी। एकल मां परिवारों के इन नुकसान के बावजूद, इन परिवारों के बच्चे अन्य परिवारों की तुलना में अलग नही थे। एकमात्र समस्या जिसे एकल माता–पिता परिवारों के बच्चों के कार्यों में पाई गई, वह थी उनके व्यवाहर के साथ। इन निष्कर्षों का उपयोग जोखिम को कम करने और मौजूदा संसाधनों को एकल माता–पिता परिवारों की ताकत बढ़ाने के लिए रणनीतियों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

युको हिरतानी एवं नाहोइरी होहाशी (2016) ने जापान में किये अध्ययन में बताया कि विभिन्न वातावरण में रहने वाले बाल पालन करने वाले एवम् एकल अभिभावक परिवारों, दोनों के पारिवारिक कार्यकलापों में अन्तर मिलता है।

रोशन बॉब डी. आहूजा, कंडी एम स्टिनसन (1993) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया, कि महिला नेतृत्व वाले एकल परिवारों के प्रकार में बच्चों पर पड़ने वाला प्रभाव परिवार की जनसांख्यिकीय विशेषताओं के अनुसार बदलता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लेख के माध्यम से समाज में संकुचित नातेदारी एवं सम्बन्धों की व्यवस्था का बच्चे के समाजीकरण पर प्रभाव का अध्ययन विभिन्न प्रकार की उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालना है। कुछ उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1. भारतीय समाज में एकल अभिभावक परिवारों से आने वाले बच्चों की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. बालक के व्यवहार और शिक्षा पर संकुचित नातेदारी के प्रभावों की जांच करने के लिए।
3. समाज में प्रचलित एकल अभिभावक की समस्याओं के बारे में जानकारी प्रकाश डालना।
4. आधुनिक समाज में एकल अभिभावक की भूमिका निर्वहन में आने वाली कठिनाईयों के बारे में जानना।

अध्ययन पद्धति

किसी भी लेख को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति की आवश्यकता होती है। चूंकि सामाजिक विज्ञानों विशेषतः समाजशास्त्र में मानवीय व्यवहारों का अध्ययन किया जाता

है जो कि एक जटिल कार्य है। अतः किसी एक विधि के द्वारा मानव व्यवहार से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्र करना सम्भव नहीं हैं, इसलिए प्रस्तुत लेख में समाजशास्त्र में प्रचलित प्रमुख विधियों, जिनमें साक्षात्कार, अवलोकन व केन्द्रित सामूहिक परिचर्चा के द्वारा तथ्यों को एकत्र किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद में किया गया। मेरठ जनपद उत्तर प्रदेश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता हैं। मेरठ, भारत के उत्तर प्रदेश का एक शहर है। यह प्राचीन नगर दिल्ली से 72 किमी0 उत्तर पूर्व में स्थित है। यह तेजी से विकसित और शिक्षित जिलो में से एक है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के मतों, सम्प्रदायों व जातियों के लोग रहते है। शिक्षा के क्षेत्र में मेरठ को प्रमुख माना जाता है।

- ♣ एकल परवरिश के दौरान बच्चे जल्दी जिम्मेदार हो जाने के साथ–साथ आत्मनिर्भर भी बनते हैं, और अपनी समस्याओं का समाधान भी अपने आप खोजने के लिए परिपक्व हो जाते हैं।
- ♣ एकल अभिभावक अपने बच्चों से अपनी अधिक से अधिक बातें बताते हैं एवं अपनी सही ख्वाहिशों को आसानी से पूरा कर लेते हैं।
- ♣ बच्चा/बच्चे समय से पहले ही परिपक्व होने लगता हैं/लगते हैं और उसके अनुभव अन्य बच्चों से कहीं ज्यादा अलग होते हैं। वह जिम्मेंदारियों को सही तरह से निभाना सीख जाते हैं।

लेख के तथ्यों के संग्रहण के लिए 10 परिवारों का चयन किया गया तथा एकांकी/एकल परिवारों के बच्चों की सामाजीकरण एवं उनकी प्रवृत्ति के बारे में गहन विश्लेषण कर मुख्य तथ्यों को एकत्रित एवं व्यवस्थित किया जो निम्न प्रकार है।

1. राज्यों के प्रयास जिसमें अपराध की दर को रोकना एक बीमारी के समान है। जो हम पहले बीमार होते है बाद में इलाज ढूंढते है।
2. राज्य एवं समाज को बच्चों के संस्कारशील सामाजीकरण के उपर्युक्त अवसर प्रदान करने चाहिए।
3. आधुनिक समाज में बच्चों में एकाकीपन की प्रवत्ति तेजी से बढ़ रही है। जिसका कारण एकल परिवार का बढ़ना है।
4. संकुचित नातेदारी व्यवस्था के कारण आज बच्चों के समाजीकरण में कमी देखने को मिलती है।
5. अध्ययन में चयनित बच्चों के सार्थक नेतृत्व की पिता की भूमिका का अभाव उनके व्यक्तित्व में स्पष्ट दिखायी देता है। पिता के सामाजीकरण के मूल्यों के अभाव में बच्चें अपने आपको हीन समझने लगते है।

पिछले 30 वर्षो में परिवार रूपी संस्था मे तेजी के साथ परिवर्तन देखने को मिल रहे है। जहाँ मनुष्य संयुक्त परिवार में रहता था बच्चें किस कक्षा में पढ़ते है उन्हें यह तक जानकारी नही रहती थी बाद में एकांकी परिवारों में तबदील होने के कारण बच्चों को जिम्मेदारी उसी अनुपात में बढ़ती दिखायी जैसे व्यक्तिवादिता बढ़ी इस स्थिति के परिवर्तन में बच्चों का पालन पोशण सीधे–सीधे प्रभावित हुआ है। आज एकांगी परिवार होने के कारण मूल्य शिक्षा जो बचपन का अमूल्य हिस्सा होता था आज बच्चों की दिनचर्या से गायब हो गया जिसा स्थान आधुनिक टैक्नालॉजी ने लिया जिसके कारण बच्चे के व्यवहार में हिंसक प्रवृत्ति, असामान्य व्यवहार, एवं व्यक्तित्व विकास नितान्त कमी दिखायी पड़ती है। जिसके समय रहते उपाय खोजने की आवष्यकता है। जिसे लिये हमे अपनी मानसिक स्थिति में बदलाव लोने होगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 आहुजा, राम *'भारतीय समाज'* रावत पब्लिकेशन्स (2002) पेज न0 **92–143**

2 अग्रवाल, जी0के0 *'समाजशास्त्र परिचय'* एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाऊस (2011), पेज न0 **105–122**

3 ऑगर्बन एवं निमकॉफ, *' ए हैण्ड बुक ऑफ सोशियोलॉजी,'* आई0एस0बी0एन0 पब्लिकेशन (1953), पेज न0 **182**

4 आहूजा, डी0बॉब रोशन एवं स्टिनसन एम0 कंडी *'महिला–शीर्षक एकल अभिभावक परिवार पारिवारिक निर्णय लेने में बच्चों के प्रभाव का अन्वेषण अध्ययन,'* उपभोक्ता अनुसंधान वाल्यूम 20 (1993) पेज न0 **459–474**

5 देसाई आई0पी0 *'भारत में संयुक्त परिवार' एक विश्लेषण, सोशियोलाजिकल बुलेटिन* (1956) पेज न0 **148**

6 हिल्टन, एम0जैनी व डैविल एल0 एस्थर, *'एकल माँ, एकल पिता में पेरेटिंग और बच्चों के व्यवहार की तुलना और अक्षुण्ण परिवार,'* तलाक और पुनर्विवाह के जर्नल खण्ड 29, (12 अक्टूबर 2008) पेज **23–54**

7 जौली, ज0, *'हिन्दु लॉ एण्ड कस्टम,'* ग्रेटर इण्डिया सोसाइटी, पब्लिकेशन (1928) पेज **02**

8 कपाडिया, के एम, *'भारत में विवाह एवम् परिवार'* ऑक्सफार्ड यूनिवर्स्टी प्रेस. (1955)

9 कोतवाल निधि एवं प्रभाकर भारती, *'एकल माताओं द्वारा पेश आ रही समस्याऐं,* जर्नल ऑफ सोषल साइन्स, वॉलूम 21, (2009) पेज नं0 **197–204**

10 कार्वे इरावती, *'भारत में नातेदारी व्यवस्था'* ऐशिया पब्लिशिंग हाऊस, (1953) पेज न0 **10**

11 महाजन एवं महाजन, *'सोशियोलॉजी ऑफ किनशिप, मेंरिज एण्ड फैमिली,'* विवेक प्रकाशन (2009) पेज–**188–217**

12 मिश्रा राजन, *'नातेदारी, विवाह एवम परिवार'* एस0आर0 साइन्टिफिक पब्लिकेषन्स (2006) पेज नं0 **95–129**

13 मरडॉक, जे0पी0, *'सोशल स्ट्रक्चर'* मेंकमिल कम्पनी न्यूयार्क (1949) पेज–**02**

14 पेट्ररिया, ओवरूया, *'फैमिली एण्ड मेंरिज इन इण्डिया',* न्यू दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्स्टी प्रेस–(1993)

15 प्रभु0 पी0 एच0, *'हिन्दु सोशल आग्रेनाइजेशन'*, पोपलर पब्लिकेशन्स (1995)

16 शर्मा0 जी0 एल0, *'सामाजिक मुद्दे',* रावत पब्लिकेशन्स, (2015) पेज **3–18**

17 स्टीफन और लारेंन *'अेले माता–पिता परिवार और उनके प्रभाव पर बच्चे अमासोमा समुदाय का एक अध्ययन,* (बेयेलसा राज्य) सोशल साइसेज में यूरोपीय जर्नल ऑफ रिसर्च वॉल्यूम–04 (2016) पेज नं0–**9**

18 शोभिता, जैन *'भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी'*, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर (1996)